अध्याय 6: बादल राग

विषय-सूची 4 प्रश्नावली · 10 प्रश्न

प्रश्नावली 6.1	कविता के साथ	4 प्रश्न
प्रश्नावली 6.2	व्याख्या कीजिए	2 प्रश्न
प्रश्नावली 6.3	कला की बात	3 प्रश्न
प्रश्नावली 6.4	शब्द-छवि	1 प्रश्न

प्रश्नावली 6.1 — कविता के साथ

प्रश्न 1

अस्थिर सुख पर दुख की छाया पंक्ति में दुख की छाया किसे कहा गया है और क्यों?

हल

इस पंक्ति में 'दुख की छाया' बादल को कहा गया है।
समीर-सागर (वायु के समुद्र, अर्थात् आकाश) पर तिरता हुआ बादल 'अस्थिर सुख' (क्षणिक, बदलते सुख) पर छाया की तरह आता है।
बादल जब आता है, तो वह धूप की तपन और क्षणिक सुख पर एक छाया — एक रहस्यमय आवरण — डाल देता है।
यहाँ 'अस्थिर सुख' पूँजीपतियों और शोषकों का क्षणिक वैभव है, जो स्थायी नहीं है।
उस अस्थिर सुख पर 'दुख की छाया' के रूप में विप्लव (क्रांति) का बादल आता है, जो शोषण और विषमता को उलट देने की शक्ति लेकर आता है।
इस प्रकार बादल का आगमन शोषितों के लिए आशा का संदेश है, तो शोषकों के सुख पर एक अशुभ छाया।

उत्तर: इस पंक्ति में 'दुख की छाया' बादल को कहा गया है। पूँजीपतियों के अस्थिर और क्षणिक सुख पर विप्लव का बादल दुख की छाया बनकर मँडराता है — यह छाया क्रांति और परिवर्तन का अग्रदूत है।

प्रश्न 2

अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर पंक्ति में किसकी ओर संकेत किया गया है?

हल

इस पंक्ति में बादलों के बीच चमकने वाली बिजली के आघात से 'शापित' (आहत) हुए ऊँचे-ऊँचे वृक्षों की ओर संकेत किया गया है।
'अशनि-पात' का अर्थ है वज्रपात — बिजली का गिरना।
'उन्नत शत-शत वीर' — ये सैकड़ों ऊँचे, वीर वृक्ष हैं जो बिजली के प्रहार से क्षत-विक्षत और हत हो जाते हैं, किंतु अपनी जगह डटे रहते हैं।
प्रतीकात्मक अर्थ में ये 'वीर' उन क्रांतिकारियों की ओर भी संकेत करते हैं जो व्यवस्था के प्रहार (शोषण, दमन) से घायल होकर भी 'गगन-स्पर्शी स्पर्द्धा धीर' बने रहते हैं — हार नहीं मानते।

निराला यहाँ बादल के भीतर संचित विनाशकारी शक्ति को और उस शक्ति का सामना करने वाले वीरों के साहस को एक साथ चित्रित करते हैं।

उत्तर: 'अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर' में उन ऊँचे वृक्षों की ओर संकेत है जो वज्रपात से आहत और क्षत-विक्षत होते हैं, किंतु गिरते नहीं। प्रतीक रूप में ये क्रांति की आँधी में घायल किंतु अडिग क्रांतिवीरों का भी चित्रण है।

प्रश्न 3

विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते पंक्ति में विप्लव-रव से क्या तात्पर्य है? छोटे ही हैं शोभा पाते ऐसा क्यों कहा गया है?

हल

'विप्लव-रव' का तात्पर्य है — क्रांति का शोर, विप्लव (बाढ़ और क्रांति) की गर्जना। बादल की गरज और बारिश की आवाज़ यहाँ क्रांति के रूपक के रूप में प्रयुक्त है।

'छोटे ही हैं शोभा पाते' — यहाँ छोटे पौधे, छोटे बच्चे, सामान्य श्रमिक और किसान अर्थात् समाज के वंचित और लघु मानव को संकेतित किया गया है।

क्रांति (विप्लव) के आने पर छोटे पौधे हिल-हिल खिल-खिल करके बादल को बुलाते हैं, हाथ हिलाते हैं — वे प्रसन्न हैं।

इसके विपरीत 'अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर' — अर्थात् बड़े और ऊँचे (उन्नत) वृक्ष — वज्रपात से क्षत-विक्षत और अचल (निश्चल) होकर गिर पड़ते हैं; क्रांति की मार बड़े एवं समर्थ को ही सहनी पड़ती है, छोटों को नहीं।

इस प्रकार क्रांति का स्वागत छोटे-छोटे (वंचित) ही करते हैं क्योंकि विप्लव उन्हें शोषण से मुक्ति दिलाता है और उनके लिए नई हरियाली लाता है।

कवि कहना चाहता है कि क्रांति सदैव दीन-दुखियों की पक्षधर होती है — वे ही उससे शोभा पाते हैं, बड़े नहीं।

उत्तर: 'विप्लव-रव' से तात्पर्य क्रांति की गर्जना है। 'छोटे ही हैं शोभा पाते' इसलिए कहा गया क्योंकि क्रांति (विप्लव) का स्वागत छोटे पौधे, छोटे बच्चे और सामान्य श्रमिक-किसान (वंचित वर्ग) करते हैं — वे हाथ हिलाकर बुलाते हैं। इसके विपरीत बड़े-ऊँचे वृक्ष ('उन्नत शत-शत वीर') वज्रपात से क्षत-विक्षत होकर गिर पड़ते हैं — क्रांति की चोट बड़े एवं समर्थ को ही सहनी पड़ती है।

प्रश्न 4

बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले किन-किन परिवर्तनों को कविता रेखांकित करती है?

हल

कविता 'बादल राग' में बादलों के आगमन से प्रकृति में निम्नलिखित परिवर्तन रेखांकित किए गए हैं:

1. आकाश में हलचल: बादल समीर-सागर पर तिरते हुए आते हैं — आकाश में उमड़-घुमड़ शुरू होती है।
2. गर्जन-वर्षण: बार-बार गर्जन और मूसलधार वर्षण होता है। 'हृदय थाम लेता संसार, सुन-सुन घोर वज्र-हुंकार' — संसार वज्र-हुंकार सुनकर रुक जाता है।
3. वज्रपात: अशनि-पात से ऊँचे-ऊँचे वृक्ष क्षत-विक्षत होते हैं, किंतु अपनी जगह खड़े रहते हैं।

4. छोटे पौधों का उल्लास: हँसते हैं छोटे पौधे — शस्य (हरी फसलें) हिल-हिल खिल-खिल करती हैं, बादल को हाथ हिलाकर बुलाती हैं।
5. पृथ्वी के सुप्त अंकुरों का जागरण: पृथ्वी के भीतर सोए अंकुर नई आशा में सिर ऊँचा करके बादल को देखने लगते हैं।
6. धरती का तृप्त होना: गरमी से दग्ध (जली-तपी) धरती बारिश से तृप्त होती है।
इस प्रकार बादल के आगमन से प्रकृति में जल-भरे मेघ, गर्जन, वज्रपात, मूसलधार वर्षा, हरियाली, और सुप्त जीवन का पुनरुत्थान — ये सब परिवर्तन होते हैं।

उत्तर: बादलों के आगमन से प्रकृति में — मूसलधार वर्षण, घोर वज्र-हुंकार, वज्रपात से वृक्षों का क्षत-विक्षत होना, छोटे पौधों और फसलों का हिल-हिल खिल-खिल करना, पृथ्वी के सुप्त अंकुरों का सिर उठाना, और तपी-जली धरती का तृप्त होना — ये परिवर्तन रेखांकित होते हैं।

प्रश्नावली 6.2 — व्याख्या कीजिए

प्रश्न 1

निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए — तिरती है समीर-सागर पर अस्थिर सुख पर दुख की छाया— जग के दग्ध हृदय पर निर्दय विप्लव की प्लावित माया—

हल

इन पंक्तियों में कवि निराला ने बादल के आगमन और उसके प्रतीकार्थ का अत्यंत सजल और व्यंजक चित्रण किया है।

'तिरती है समीर-सागर पर' — बादल वायु के असीम समुद्र (आकाश) पर तैरता हुआ चला आ रहा है। 'समीर-सागर' एक सुंदर रूपक है — वायु को सागर कहा गया है और बादल उस पर तिर रहा है।

'अस्थिर सुख पर दुख की छाया' — यह सुख-दुख का गहन प्रतीकात्मक बिंब है। पूँजीपतियों और शोषकों का सुख अस्थिर है — क्षणिक, परिवर्तनशील। उस अस्थिर सुख पर बादल (विप्लव) 'दुख की छाया' बनकर आता है।

'जग के दग्ध हृदय पर' — संसार का हृदय तपा हुआ है, जला हुआ है — शोषण, अकाल, विपन्नता से।

'निर्दय विप्लव की प्लावित माया' — इस दग्ध (जले) संसार पर विप्लव (क्रांति और बाढ़) की 'निर्दय' — किसी के प्रति दया न करने वाली — बाढ़ उमड़ आती है। 'प्लावित माया' अर्थात् जल की तरह बहती क्रांति।

समग्र भाव: बादल/क्रांति समीर-सागर पर तिरती हुई आती है, शोषकों के सुख पर दुख की छाया बनती है और जगत के जले हुए हृदय पर विप्लव का जल उमड़ाती है — यह एक साथ विनाश और पुनर्निर्माण का चित्र है।

उत्तर: इन पंक्तियों में बादल वायु के सागर (आकाश) पर तिरता हुआ आता है। वह शोषकों के अस्थिर सुख पर दुख की छाया बनकर आता है और शोषण-अकाल से जले-तपे संसार के हृदय पर क्रांति (विप्लव) का जल बहाता है। यह बिंब एक साथ बादल की प्राकृतिक क्रिया और क्रांति के प्रतीकार्थ को व्यक्त करता है।

प्रश्न 2

निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए — अट्टालिका नहीं है रे आतंक-भवन सदा पंक पर ही होता जल-विप्लव-प्लावन

हल

इन पंक्तियों में कवि निराला ने धनी वर्ग के महलों और क्रांति के स्वभाव पर गहरी टिप्पणी की है।

'अट्टालिका नहीं है रे / आतंक-भवन' — 'अट्टालिका' का अर्थ है ऊँची अट्टालिकाएँ, महल। कवि कहता है कि ये महल केवल 'अट्टालिकाएँ' नहीं हैं — ये 'आतंक-भवन' हैं — भय और आतंक के घर हैं। इनमें रहने वाले धनी वर्ग के लोग बादल की गर्जना से (क्रांति के भय से) 'अंगना-अंग से लिपटे भी / आतंक अंक पर काँप रहे हैं' और 'नयन मुख ढाँप रहे हैं'।

'सदा पंक पर ही होता / जल-विप्लव-प्लावन' — 'पंक' का अर्थ है कीचड़, दलदल। कवि कहता है कि जल-विप्लव (बाढ़ और क्रांति का जल-प्रवाह) सदा नीचे — कीचड़ (पंक) पर ही आता है, ऊँचे महलों पर नहीं।

प्रतीकार्थ: क्रांति और विप्लव का प्रवाह सदा वंचितों, दीन-दुखियों, 'पंक' अर्थात् निम्न स्थान में रहने वालों के पास जाता है। जैसे 'क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से / सदा छलकता नीर' — छोटे कमल से ही नीर छलकता है।

कवि कह रहा है: बाढ़ (क्रांति) का जल ऊँचे महलों (शोषकों) को नहीं, नीचे कीचड़ में रहने वालों (शोषितों) को तृप्त करता है। यही क्रांति का स्वभाव और उद्देश्य है।

उत्तर: इन पंक्तियों में कवि कहता है कि ये ऊँची अट्टालिकाएँ वास्तव में 'आतंक-भवन' हैं — धनी वर्ग यहाँ क्रांति के भय से काँप रहा है। जल-विप्लव (क्रांति का जल-प्रवाह) सदा पंक (कीचड़-निम्न स्थान) पर ही होता है — अर्थात् क्रांति का लाभ वंचितों तक पहुँचता है, न कि ऊँचे महलों में रहने वाले शोषकों तक।

प्रश्नावली 6.3 — कला की बात

प्रश्न 1

कविता में रूपक अलंकार का प्रयोग कहाँ-कहाँ हुआ है? संबंधित वाक्यांश को छाँटकर लिखिए।

हल

कविता 'बादल राग' में रूपक अलंकार के निम्नलिखित उदाहरण हैं:

1. 'समीर-सागर' — वायु को सागर कहा गया है। वायु (समीर) + सागर = रूपक।
2. 'रण-तरी' — बादल को युद्ध की नौका (रण-तरी) कहा गया है। बादल = रण-तरी, रूपक।
3. 'दुख की छाया' — बादल को दुख की छाया के रूप में रखा गया है, जो अस्थिर सुख पर पड़ती है।
4. 'आतंक-भवन' — अट्टालिका को आतंक-भवन कहा गया है। भवन = आतंक का प्रतीक।
5. 'विप्लव के वीर' — बादल को विप्लव का वीर कहा गया है। 'ऐ विप्लव के वीर!' संबोधन में रूपक है।
6. 'जीवन के पारावार' — बादल को जीवन का सागर कहा गया है। 'ऐ जीवन के पारावार!' में रूपक।
7. 'विप्लव के बादल' — बादल को विप्लव (क्रांति) का प्रतीक रूप दिया गया है — संपूर्ण कविता का केंद्रीय रूपक।

उत्तर: रूपक अलंकार के उदाहरण: 'समीर-सागर' (वायु = सागर), 'रण-तरी' (बादल = युद्ध-नौका), 'आतंक-भवन' (अट्टालिका = आतंक-भवन), 'ऐ विप्लव के वीर' (बादल = क्रांतिवीर), 'ऐ जीवन के पारावार' (बादल = जीवन-सागर)।

प्रश्न 2

इस कविता में बादल के लिए 'ऐ विप्लव के वीर!', 'ऐ जीवन के पारावार!' जैसे संबोधनों का इस्तेमाल किया गया है। बादल राग कविता के शेष पाँच खंडों में भी कई संबोधनों का इस्तेमाल किया गया है। जैसे— अरे वर्ष के हर्ष!, मेरे पागल बादल!, ऐ निर्बंध!, ऐ स्वच्छंद!, ऐ उद्दाम!, ऐ सम्राट!, ऐ विप्लव के प्लावन!, ऐ अनंत के चंचल शिशु सुकुमार! उपर्युक्त संबोधनों की व्याख्या करें तथा बताएँ कि बादल के लिए इन संबोधनों का क्या औचित्य है?

हल

बादल को दिए गए इन संबोधनों की व्याख्या और औचित्य निम्नलिखित है:

1. 'ऐ विप्लव के वीर!' — बादल को क्रांति का वीर कहा गया है। जैसे एक वीर योद्धा रणभूमि में गर्जता और शत्रु को परास्त करता है, वैसे ही बादल अपनी गर्जना और वज्रपात से सब कुछ परिवर्तित कर देता है।
2. 'ऐ जीवन के पारावार!' — बादल जीवन का सागर है। वर्षा से ही खेती होती है, जीवन बचता है। बादल जीवन-दाता है।
3. 'अरे वर्ष के हर्ष!' — बादल वर्षा ऋतु का हर्ष (आनंद) है। उसके आने से प्रकृति और मनुष्य दोनों में उल्लास आता है।
4. 'मेरे पागल बादल!' — बादल के स्वच्छंद, अनियंत्रित स्वभाव को 'पागल' कहा गया है — वह किसी नियम-बंधन को नहीं मानता।
5. 'ऐ निर्बंध!', 'ऐ स्वच्छंद!' — बादल किसी बंधन में नहीं रहता, स्वतंत्र विचरण करता है — यह क्रांतिकारी स्वभाव का प्रतीक है।

6. 'ऐ उद्दाम!' — उद्दाम का अर्थ है उफनता हुआ, अनियंत्रित। बादल का वेग और क्रांति का प्रवाह दोनों उद्दाम हैं।
7. 'ऐ सम्राट!' — बादल को सम्राट कहा गया है क्योंकि वह आकाश पर राज करता है — समग्र प्रकृति उसके अधीन है।
8. 'ऐ विप्लव के प्लावन!' — बादल विप्लव की बाढ़ है, जो सब कुछ बहा देती है।
9. 'ऐ अनंत के चंचल शिशु सुकुमार!' — बादल असीमित आकाश का चंचल और कोमल बच्चा है — यह कोमलता और विशालता का सुंदर संयोजन है।

औचित्य: ये सभी संबोधन बादल के विविध रूपों को उजागर करते हैं — क्रांतिकारी, जीवनदाता, स्वच्छंद, और विशाल। निराला बादल को केवल प्राकृतिक घटना नहीं, बल्कि परिवर्तन, क्रांति और जीवन के प्रतीक के रूप में देखते हैं। इन संबोधनों से कविता में काव्यात्मक तीव्रता और भावनात्मक जुड़ाव उत्पन्न होता है।

उत्तर: बादल के सभी संबोधन उसके विविध रूपों को उभारते हैं — 'विप्लव के वीर' (क्रांतिकारी), 'जीवन के पारावार' (जीवनदाता), 'निर्बंध/स्वच्छंद' (स्वतंत्र), 'सम्राट' (प्रभुत्वशाली), 'चंचल शिशु सुकुमार' (कोमल-विशाल)। इनका औचित्य यह है कि निराला बादल को केवल प्राकृतिक वस्तु नहीं, क्रांति और पुनर्निर्माण का जीवंत प्रतीक मानते हैं।

प्रश्न 3

कविता को प्रभावी बनाने के लिए कवि विशेषणों का सायास प्रयोग करता है जैसे— अस्थिर सुख। सुख के साथ अस्थिर विशेषण के प्रयोग ने सुख के अर्थ में विशेष प्रभाव पैदा कर दिया है। ऐसे अन्य विशेषणों को कविता से छाँटकर लिखें तथा बताएँ कि ऐसे शब्द-पदों के प्रयोग से कविता के अर्थ में क्या विशेष प्रभाव पैदा हुआ है?

हल

कविता में विशेषणों के सायास प्रयोग के उदाहरण और उनका प्रभाव:

1. 'अस्थिर सुख' — 'अस्थिर' विशेषण से सुख की क्षणभंगुरता और अनिश्चितता सिद्ध होती है। यह पूँजीपतियों के सुख पर व्यंग्य है।
2. 'दग्ध हृदय' — 'दग्ध' (जला हुआ) विशेषण से संसार की पीड़ा और तड़प का भाव अत्यंत तीव्रता से उभरता है।
3. 'निर्दय विप्लव' — 'निर्दय' विशेषण से क्रांति की अपार और अनवरत शक्ति का बोध होता है — वह दया नहीं करती।
4. 'सुप्त अंकुर' — 'सुप्त' (सोया हुआ) विशेषण से पृथ्वी के अंदर सोई जीवन-शक्ति का बोध होता है जो बादल के आने पर जागती है।
5. 'घोर वज्र-हुंकार' — 'घोर' विशेषण से वज्र की हुंकार की भयानकता और तीव्रता व्यक्त होती है।
6. 'उन्नत शत-शत वीर' — 'उन्नत' और 'शत-शत' विशेषणों से वृक्षों/वीरों की ऊँचाई और संख्या का प्रभावशाली चित्र बनता है।
7. 'गगन-स्पर्शी स्पर्द्धा धीर' — 'गगन-स्पर्शी' और 'धीर' विशेषणों से वृक्षों की आकाश छूती ऊँचाई और स्थिर धैर्य का बोध होता है।
8. 'लघुभार' (छोटे पौधे) — 'लघु' विशेषण से वंचित वर्ग की सरलता और हल्केपन का संकेत है जो क्रांति में आनंद लेते हैं।

9. 'कृषक अधीर' — 'अधीर' विशेषण से किसान की बेचैनी और बादल की प्रतीक्षा की व्याकुलता व्यक्त होती है।
10. 'जीर्ण बाहु, शीर्ण शरीर' — 'जीर्ण' और 'शीर्ण' विशेषण शोषित किसान की दुर्बलता और दुर्दशा को मार्मिक रूप से उजागर करते हैं।

उत्तर: कविता से चुने गए प्रमुख विशेषण-पद: 'दग्ध हृदय' (जले हृदय की पीड़ा), 'निर्दय विप्लव' (क्रांति की निर्ममता), 'सुप्त अंकुर' (सोई जीवन-शक्ति), 'घोर वज्र-हुंकार' (वज्र की भयावहता), 'गगन-स्पर्शी' (आकाश छूती ऊँचाई), 'अधीर कृषक' (व्याकुल किसान), 'जीर्ण-शीर्ण शरीर' (शोषित किसान की दुर्बलता)। इन विशेषणों से कविता में जीवंत चित्र, भावनात्मक गहराई और सामाजिक व्यंग्य एक साथ उत्पन्न होते हैं।

प्रश्नावली 6.4 — शब्द-छवि

प्रश्न 1

शब्द-छवि: निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताइए — रुद्ध | क्षुब्ध | अंक | शीर्ण | कृषक | विप्लव | दग्ध | रण-तरी | प्लावित | भेरी | सुप्त | अशनि-पात | क्षत-विक्षत | हत | शस्य

हल

रुद्ध — रुका हुआ
क्षुब्ध — अशांत, क्रुद्ध
अंक — हृदय
शीर्ण — क्षीण, दुर्बल, कमज़ोर
कृषक — किसान
विप्लव — क्रांति, बाढ़
दग्ध — तप्त, तपा हुआ
रण-तरी — युद्ध की नौका
प्लावित — बहा दिया गया
भेरी — बड़ा ढोल
सुप्त — सोया हुआ
अशनि-पात — वज्रपात
क्षत-विक्षत — लहूलुहान, बुरी तरह से घायल
हत — घायल, मारा हुआ
शस्य — हरा (हरी फसल)

उत्तर: रुद्ध=रुका हुआ, क्षुब्ध=अशांत/क्रुद्ध, अंक=हृदय, शीर्ण=क्षीण, कृषक=किसान, विप्लव=क्रांति/बाढ़, दग्ध=तपा हुआ, रण-तरी=युद्ध की नौका, प्लावित=बहा दिया गया, भेरी=बड़ा ढोल, सुप्त=सोया हुआ, अशनि-पात=वज्रपात, क्षत-विक्षत=लहूलुहान/घायल, हत=मारा हुआ, शस्य=हरा/हरी फसल।